



पाठ-सोलह सब से बड़ा धन

साक्षरता, सामान्य, अक्षर, सीढ़ी, अध्ययन, उन्नति, रहस्य, अनिवार्य,
निरक्षर, प्राथमिक, अभियान, अन्तर्गत, प्रतिशत, नागरिक, कुंजी।

साक्षरता का सामान्य अर्थ है — अक्षर लिखने का ज्ञान प्राप्त करना। अक्षर पहचानने और उन्हें लिखने का ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा की पहली सीढ़ी है। इस ज्ञान को प्राप्त किए बिना किसी भी विषय का गम्भीर अध्ययन नहीं किया जा सकता।

अब हम पुराने काल में नहीं जा रहे हैं। हमारा युग आधुनिक युग है। इसमें विज्ञान ने बहुत उन्नति की है। विज्ञान की सहायता से अनेक नई-नई बातें प्रकट हुई हैं और मनुष्य ने प्रकृति के रहस्य खोलने में सफलता पाई है। इससे हमारे समाज का विकास हुआ है। यह अनिवार्य है कि हमारा समाज लगातार विकास के मार्ग पर बढ़ता रहे। यह तभी सम्भव है, जब हम सब पढ़ना-लिखना जानते हों। पढ़ने-लिखने और समाज के विकास का गहरा सम्बन्ध है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ था। गाँव में रहने वाले लोग निरक्षर थे। इसलिए हम तेजी से विकास नहीं कर सके। स्वतन्त्र भारत की सरकार ने बड़ी संख्या में प्राथमिक विद्यालय खोले। इसके बाद साक्षरता की विशाल योजना बनाई। शिक्षा और साक्षरता सम्बन्धी योजनाओं के परिणाम आश्चर्यजनक रूप से अच्छे निकले। साक्षरता का प्रतिशत तेजी से बढ़ने लगा। फलस्वरूप हमारा देश भी तीव्र गति से विकास करने लगा।

अज्ञान का अन्धकार सब से भयानक होता है। जिस समाज के नागरिक अज्ञानी होते हैं, वह समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता। साक्षरता अज्ञान को मिटाने की कुंजी है। जो साक्षर होता है। वह बहुत सारे विषयों की जानकारी आसानी से प्राप्त कर लेता है और ज्ञानी बन जाता है। जैसे सूर्य निकलते ही अंधेरा भाग जाता है, वैसे ही ज्ञान मिलते ही अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है।

हमारा एक कर्तव्य भी है। हम मुहल्ले-पड़ोस में पता लगाएँ कि कौन साक्षर नहीं है। जो साक्षर न हो, उसे साक्षर बनाने की कोशिश करें। हम अपनी पढ़ाई में थोड़ा-सा समय बचा कर अपने पास-पड़ोस के लोगों को साक्षर बना सकते हैं। किसी ने कहा है कि विद्यादान से बड़ा कोई दान नहीं होता।

विद्या ऐसा धन है, जो खर्च करने पर बढ़ता है और खर्च न करने पर घटता जाता है। इसलिए हमें अपनी विद्या हमेशा दूसरों को देनी चाहिए। इससे हमारा भी भला होगा और समाज का भी।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :
 - साक्षरता = पढ़े-लिखे होने की दशा।
 - सीढ़ी = ऊँचे स्थान पर पहुँचने के लिए बना हुआ बाँसों का सिलसिला, जीना।
 - सामान्य = साधारण, मामूली।
 - उन्नति = बढ़ती, तरक्की।
 - रहस्य = गुप्त भेद, गोपनीय विषय।
 - अनिवार्य = जिस काम या दशा को टालना संभव न हो, आवश्यक।
 - गहरा = जिसकी सतह किनारे से नीची हो, गम्भीर, कठिन।
 - निरक्षर = अनपढ़, जिसे अक्षर-ज्ञान न हो।
 - अभियान = सामने जाना, युद्ध के लिए आगे बढ़ना।
 - प्रतिशत = प्रति सौ, सौ का अंश।
 - कुंजी = चाबी, अर्थ बताने वाली पुस्तक।
2. उत्तर दीजिए :
 - (क) साक्षरता का क्या अर्थ है ?
 - (ख) शिक्षा की पहली सीढ़ी क्या है ?
 - (ग) किससे हमारे समाज का विकास हुआ है ?
 - (घ) भारत सरकार ने प्रत्येक नागरिक को अक्षर-ज्ञान से परिचित कराने के लिए क्या किया ?
 - (ङ) साक्षरता अज्ञान को मिटाने की कुंजी क्यों कही गई है ?
 - (च) साक्षरता के बारे में हमारा क्या कर्तव्य है ?
 - (छ) विद्या कैसा धन है ?
 - (ज) हमें अपनी विद्या हमेशा दूसरों को क्यों देनी चाहिए ?

(झ) साक्षरता के लिए क्या-क्या कदम उठाए जाने चाहिए ?

(ञ) अपने मुहल्ले के लोगों की साक्षरता के लिए आप क्या करना चाहेंगे ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

साक्षरता -----
निरक्षर -----
सीढ़ी -----
उन्नति -----
रहस्य -----
अनिवार्य -----
अभियान -----
प्रतिशत -----
कुंजी -----

4. तालिका को देखिए, ध्यान से पढ़िए और खण्ड “क” तथा “ख” के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
अब हम विज्ञान की सहायता से सरकार ने सारे देश में हमारा देश भी जो साक्षर होता है	प्राथमिक शिक्षा का अभियान चलाया। उसके लिए ज्ञान का मार्ग खुल जाता है। अनेक नई-नई बातें प्रकट हुई हैं। पुराने काल में नहीं जी रहे हैं। तीव्र गति से विकास करने लगा।

5. वाक्य पूरा कीजिए :

- (क) मनुष्य ने प्रकृति के रहस्य ----- |
- (ख) इसके अन्तर्गत बड़ी संख्या में ----- |
- (ग) साक्षरता का प्रतिशत ----- |
- (घ) ज्ञान मिलते ही अज्ञान का ----- |
- (ङ) इससे हमारा भी भला होगा ----- |

6. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (X) का निशान लगाइए :

- (क) हमारा युग आधुनिक युग है। ☐
- (ख) गाँव में रहने वाले लोग साक्षर थे। ☐
- (ग) अज्ञान का अन्धकार सब से भयानक होता है। ☐
- (घ) साक्षरता अज्ञान को मिटाने की कुंजी है। ☐
- (ङ) हमें अपनी विद्या हमेशा दूसरों को नहीं देनी चाहिए। ☐

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

पठित पाठ में एक वाक्य है – “किसी ने कहा है कि विद्यादान से बड़ा दान नहीं होता” ।
 इस वाक्य के “किसी ने कहा है” वाक्य-खण्ड से पूर्ण अर्थ का बोध होता है और दूसरे वाक्य-
 खण्ड “विद्यादान से बड़ा कोई दान नहीं होता” से भी पूर्ण अर्थ का बोध होता है। इस प्रकार
 के पूर्ण अर्थ प्रकट करने वाले वाक्य-खण्ड को उपवाक्य कहते हैं।

उपवाक्य के तीन भेद होते हैं –

- (क) स्वतन्त्र उपवाक्य

- (ख) प्रधान उपवाक्य
 (ग) आश्रित उपवाक्य
- (क) स्वतन्त्र उपवाक्य :- इस प्रकार का उपवाक्य किसी पर आश्रित न होकर अपने आप में स्वतन्त्र होता है। जैसे –
 मैंने यह काम किया।
 हमारा युग आधुनिक युग है।
 हमारा एक कर्तव्य भी है।
- (ख) प्रधान उपवाक्य :- मिश्र वाक्य का जो मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय वाला वाक्य-खण्ड होता है, वह प्रधान उपवाक्य होता है। जैसे –
किसी ने कहा है कि विद्यादान से बड़ा कोई दान नहीं होता।
हम मुहल्ले-पड़ोस में पता लगाएँ कि कौन साक्षर नहीं है।
बाप की इच्छा थी कि बेटा डॉक्टर बने।
- उपर्युक्त उदाहरणों में “किसी ने कहा है”, “हम मुहल्ले-पड़ोस में पता लगाएँ” और “बाप की इच्छा थी” प्रधान उपवाक्य हैं। प्रधान उपवाक्य यद्यपि दूसरे वाक्यों से जुड़ा रहता है, तथापि अर्थ और भाव में स्वतन्त्र होता है।
- (ग) आश्रित उपवाक्य :- इस प्रकार के उपवाक्य का अर्थ प्रधान उपवाक्य पर आश्रित रहता है। जैसे –
 मैं जानता हूँ कि वह निर्दोष है।
 बाप की इच्छा थी कि बेटा डॉक्टर बने।
 जो मेहनत करता है, उसे सफलता मिलती है।
- उपर्युक्त उदाहरणों में “कि वह निर्दोष है”, “कि बेटा डॉक्टर बने” और “जो मेहनत करता है” आश्रित उपवाक्य हैं। इन तीनों उपवाक्यों के अर्थ क्रमशः “मैं जानता हूँ”, “बाप की इच्छा थी” और “उसे सफलता मिलती है” प्रधान उपवाक्यों पर आश्रित हैं।